

आर्य

॥ धर्मन नाजगद विष्काक्रमन अर्थात् वद वासिह्म यादकावनीम्वा

॥ धार्य अ० ४ न धारण ७ वा ८ वन वाडासवः ददतदास्ते नर यातदस्य

नामीनदा वा कामसु अर्थात्

सयः सनामन वाद थूका धनदसन अस्

॥ धार्य वाजाव थूका धनादन

मखा ऊवयमजियम नू वा धायान धूत

॥ धार्य वाजाव धननाम्बा नगीस्य धूत वा वद धायान वद वा लिता

विष्काग ॥ नर वा वद वासी धर्मर वाजायिन नर धनावाकास्य आद सुदय

606

॥ द ४ ॥ अमरवर्मा जयचक्रवर्ति
 ॥ यनाथश्चकार महारथ
 ॥ वासुदेविकारि शुभयाद
 ॥ इयधक लाहाक गायजिधिनकूनयानकस्यववा अयादकव
 ॥ मयापमानवा ॥ यवयाजअजि कनधर्ममदीद धर्का बाजास्य